

- (ii) "ऊधो मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयो स्याम संग को अवराधे ईस।"
- (ख) प्रेम करने वाला यदि अपने प्रेम को अपमानित होते हुए देखे तो उसे क्रोध आता है। उसकी उक्तियाँ कटु होने लगती हैं, कथनों में तिक्तता आने लगती है। यह तिक्तता साहित्य में उपालम्भ कहलाती है-
- (i) "हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
इक अति चतुर हुते पहले ही, अरु करि नेह दिखाए।
जानी बुद्धि बड़ी जुवतिन को, जोग सदेस पठाए।"
(कृष्ण पर उपालम्भ)
- (ii) "आयो घोष बड़ो व्यापारी।
लादि खेप गुन ज्ञान जोग की ब्रज में आन उतारी॥"
(उद्धव पर उपालम्भ)
- (iii) "आपुन केलि करत कुब्जा संग, हमहि सिखावत जोग।"
(कुब्जा पर उपालम्भ)
- (ग) प्रेम करने वाला यदि किसी के विचारों से अपने प्रेम को अपमानित होते देखता है तो वह भी उसके विचारों का मजाक उड़ाने से नहीं चूकता, उसके सिद्धांतों पर प्रश्न खड़ा करने से नहीं चूकता। यही गापियों ने भी किया है-
- (i) "रेख न रूप, बरन जाके नहिं, ताको हमैं बतावत।
अपनी कहाँ दरस वैसे को तुम कबहुँ हौ पावत?"
- (ii) "निर्गुन कौन देस को वासी?
मधुकर हौस समुझाय, सौह दे बूझति साँच, न हाँसी।
को है जनक, जननि को कहियत, कौन नारि कौ दासी।"
- (iii) "ऊधो! भली करी तुम आए।
वै बातें कहि कहि या दुःख मैं ब्रज के लोग हँसाए।"

सूर की अलंकार योजना

सूरदास का काव्यात्मक सौन्दर्य बहुत हद तक अलंकारों पर आधारित है। अलंकार कविता के शोभाकारक धर्म माने गये हैं। जब ये काव्य के आन्तरिक गुणों के अनुरूप होते हैं तो कविता के सौन्दर्य में अत्यधिक वृद्धि करते हैं किन्तु एक सीमा के बाद जब इनकी अति होने लगती है तो कविता का प्रभाव और सौन्दर्य कमजोर होने लगता है। सूर की अलंकार योजना बहुलांश में उनकी कविता को प्रभावशाली बनाती है किन्तु कहीं-कहीं ऐसे प्रसंग भी आये हैं जहाँ आचार्य शुक्ल के शब्दों में - "सूर को उपमा देने की झक सी चढ़ जाती है और वे उपमा पर उपमा, उत्प्रेक्षा पर उत्प्रेक्षा कहते चले जाते हैं।" दोनों पक्षों का गम्भीर विश्लेषण करते हुए सूर की अलंकार योजना का मूल्यांकन किया जा सकता है।

अलंकार दो प्रकार के माने गये हैं-शब्दालंकार और अर्थालंकार। शब्दालंकार कविता की देह से जुड़े होते हैं और तब आते हैं जब कविता में अर्थ की गहराई कम और चमत्कार प्रधानता अधिक होती है। सूर की कविता मूलतः भावनाओं की तीव्रता और सहृदयता की कविता है, इसलिए इसमें शब्दालंकारों का प्रयोग कम हुआ है। यह जरूर है कि कहीं-कहीं

उन्होंने बेहद स्वाभाविक रूप से अनुप्रास, यमक आदि शब्दालंकारों का प्रयोग किया है जो कविता के प्रभाव में साधक ही सिद्ध हुए हैं। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित उदाहरण में यमक की सुंदरता दर्शनीय है -

"निरखति अंक स्याम सुन्दर के बार-बार लावति छाती।
लोचन जल कागद मसि मिलिकै हवै गई स्याम स्याम की पाती॥"

अर्थ को अधिक महत्त्व देने वाले कवि प्रायः अर्थालंकारों का ही अधिक प्रयोग करते हैं क्योंकि जब वे भावनात्मक तीव्रता से भरकर किसी बात को बेहद सुन्दर ढंग से कहना चाहते हैं तो अभिधात्मक व सपाट कथन उन्हें अपर्याप्त प्रतीत होते हैं। सूर की अलंकार योजना में भी अर्थालंकारों का चरम महत्त्व है। उन्होंने सादृश्यमूलक अर्थालंकार भी लिये हैं और विरोधमूलक अलंकार भी। कुछ अलंकारों के उदाहरण इस प्रकार हैं -

रूपक अलंकार-

"काहे को रोकत मारग सूधो?
सुनहु मधुप! निर्गुन कंटक तें राजपंथ क्यों रूंधो?"

सांगरूपक अलंकार-

"आयो घोष बड़ो व्यापारी।
लादि खेप गुन ज्ञान-जोग की ब्रज में आन उतारी॥"

विभावना अलंकार-

"बिन पावस पावस ऋतु आई, देखत हौ बिदमान,
अब धौँ कहा कियो चाहत हौ, छाँड़हु नीरस ज्ञान॥"

सूर के अलंकार कौशल की आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। वे अपनी पुस्तक 'सूर साहित्य' में लिखते हैं कि-"सूरदास जब अपने काव्य विषय का वर्णन शुरू करते हैं, तो मानो अलंकार-शास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे-पीछे दौड़ा करता है, उपमाओं की बाढ़ आ जाती है, रूपकों की वर्षा होने लगती है, संगीत के प्रवाह में स्वयं कवि बह जाता है। वह अपने आपको भूल जाता है। काव्य में इस तन्मयता के साथ शास्त्रीय पद्धति का निर्वाह विरल है। पद-पद पर मिलने वाले अलंकारों को देखकर भी कोई अनुमान नहीं कर सकता है कि कवि जान-बूझकर अलंकारों का उपयोग कर रहा है। पत्रे पर पत्रे पढ़ते जाइये-केवल उपमाओं और रूपकों की छटा, अन्योक्तियों की बाढ़, लक्षणा और व्यंजना का चमत्कार, यहाँ तक कि एक ही चीज दो-दो, चार-चार, दस-दस बार तक दुहराई जा रही, फिर भी स्वाभाविकता और सहज-प्रवाह कहीं भी आहत नहीं हुआ।"

अलंकार योजना की कमियाँ

सूरदास की अलंकार योजना कुछ सीमाओं से भी ग्रस्त दिखाई पड़ती है। इस सीमा के संबंध में आचार्य शुक्ल को स्पष्ट रूप से कहना पड़ा कि "अंगशोभा, वेशभूषा आदि के वर्णन में सूर को उपमा देने की झक सी चढ़ जाती है और वे उपमा पर उपमा, उत्प्रेक्षा पर उत्प्रेक्षा कहते चले जाते हैं।" इस सम्बन्ध में दो पक्षों पर विचार करना आवश्यक है। पहला यह कि सूर को यह झक क्यों चढ़ती है और दूसरा यह कि उनकी कविता पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?